



LALBHAI
DALPATBHAI
MUSEUM

SHAKTIRUPA

Goddess as Imagined by the Artists

शक्तिरूपा

चित्रकारों द्वारा कल्पित देवी



Detail from the drawing, Killing of Raktabija, Devi Mahatmya
Drawing on paper, Guler kalam, Pahari, c. 1770 CE, Kasturbhai Lalbhai Collection

रेखाचित्र से विवरण, रक्तबीज का वध, देवी माहात्म्य, कागज पर बना रेखाचित्र,
गुलेर कलम, पहाड़ी, ई स १७७०, कस्तुरभाई लालभाई संग्रह

29th March, 2025 - 15th June, 2025
Venue: First Floor, Lalbhai Dalpatbhai Museum

For more details about the museum, Visit our website: www.ldmuseum.co.in

📍: [ldmuseum.ahmedabad](https://www.instagram.com/ldmuseum.ahmedabad) 📱: [ldmahmedabad](https://www.facebook.com/ldmahmedabad)

Devi, or the Goddess is a dominant figure in Indian spiritual and artistic traditions. Widely referred as **Shakti**, she embodies divine feminine energy, taking on various **rupa** (forms) across Hindu mythology and art. The divine creator in Hinduism is envisioned as either purusha (male) or nari (feminine), but also as a harmonious blend of both—Ardhanarishwara. However, veneration of the feminine as a source of creation and power predates structured religion. Mother Goddesses in the ancient civilizations were worshipped as a symbol of fertility, protection and prosperity.

Over time, this theological concept of the divine feminine evolved into a more complex and profound understanding of Shakti and animated by artists in their visualisation of the Devi. They drew upon sacred texts and oral traditions to bring Devi to life on the painted surface. Manuscripts such as the Durga Saptashati provide intricate descriptions of the Goddess which the artists interpret in unique ways. Infused with creative freedom, these representations stay rooted in textual traditions.

She is Parvati or Uma, appearing alongside her male counterpart, as the nurturing mother of Ganesha and Kartikeya; she is Lakshmi, the bestower of prosperity; she is Kali, the fierce warrior Goddess. She beheads herself in her awe-inspiring form of Chinnamasta, one of the Dasamahavidyas. She is manifold.

This exhibition brings together a selection of paintings and drawings from the Kasturbhai Lalbhai Collection and the N C Mehta Collection, alongside folios from the Durga Saptashati manuscript housed at the Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology.

“Shaktirupa: Goddess as Imagined by the Artists” places these artworks in dialogue with their textual sources and artists. It invites viewers to explore a larger vocabulary associated with Shakti—how she is described, imagined, depicted and revered. While this display focuses on Hindu representations of Devi, her presence in other traditions remains a subject for future explorations.

To deepen this experience, visitors can step into the realm of artists’ imagination through interactive elements. QR codes placed within the exhibition allow access to narrated excerpts from the texts, offering a multisensory engagement with the divine feminine.



1)



2)



3)

From left to right - Details from: 1) Shiva and Parvati as divine lovers, Drawing on Paper, Kangra kalam, Pahari. Late 18th century CE, Kasturbhai Lalbhai Collection. 2) Shiva-Parvati family, painting on paper, Kangra kalam, Pahari, c. 1800-1805 CE, N C Mehta Collection. 3) Kali, Painting on paper, Kangra kalam, Pahari, Late 18th century CE, N C Mehta Collection.

बाएं से दाएं ओर- विवरण: १) शिव और पार्वती दिव्य प्रेमीयों के रूप में, कागज पर बना रेखाचित्र, कांगड़ा कलम, पहाड़ी, १८ वीं शताब्दी का अंत भाग कस्तुरभाई लालभाई संग्रह । २) शिव-पार्वती परिवार, कागज पर बना चित्र, कांगड़ा कलम, पहाड़ी, ई स १८००- १८०५, एन. सी. मेहता संग्रह । ३) काली, कागज पर बना चित्र, कांगड़ा कलम, पहाड़ी, १८ वीं शताब्दी का अंत भाग, एन. सी. मेहता संग्रह ।



Devi watching a dance performance, Painting on paper. Jaipur kalam, Rajasthan, c. 1750 CE, Kasturbhai Lalbhai Collection

नृत्य दर्शन करती देवी, कागज पर बना चित्र, जयपुर कलम, राजस्थान, ई स १७५०
कस्तुरभाई लालभाई संग्रह

देवी भारतीय आध्यात्मिक और कलात्मक परंपराओं में एक प्रभावशाली चरित्र हैं। शक्ति के रूप में वह, हिंदू पौराणिक कथाओं, कला और पूजा पद्धति में विभिन्न रूपों को धारण करते हुए दिव्य स्त्री-ऊर्जा का प्रतीक हैं। हिंदू धर्म में दिव्य रचनाकारों को या तो पुरुष या स्त्री के रूप में देखा जाता है, परंतु साथ ही साथ दोनों को सामंजस्यपूर्ण मिश्रण के रूप में भी देखा जाता है, जैसे की अर्धनारीश्वर। हालाँकि, सृजन और शक्ति के स्रोत के रूप में स्त्री की पूजा अनादि काल से चली आ रही है। प्राचीन सभ्यताओं में मातृ देवी को उत्पत्ति का आधार, सुरक्षा और समृद्धि के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था।

दिव्य स्त्री की यह धार्मिक अवधारणा, समय के साथ विकसित हुई और चित्रकारों ने देवी की कल्पना में इसे चित्रों द्वारा जीवंत कर दिया। उन्होंने चित्रित सतह पर देवी को जीवंत करने के लिए धार्मिक ग्रंथों और मौखिक परंपराओं का सहारा लिया। दुर्गा सप्तशती जैसी पांडुलिपियाँ देवी का अलौकिक वर्णन प्रदान करती हैं, जिसकी चित्रकार अनोखे तरीके से व्याख्या करते हैं। रचनात्मक स्वतंत्रता से ओतप्रोत, यह चित्रण पाठ्य परंपराओं में निहित रहते हैं।

वह पार्वती या उमा हैं, जो अपने पुरुष सहचर के साथ गणेश और कार्तिकेय की पालन-पोषण करने वाली माँ के रूप में दिखाई देती हैं; वह लक्ष्मी हैं, जो समृद्धि प्रदान करती हैं; वह काली हैं, जो भयंकर युद्धकर्म करनेवाली देवी हैं। दशमहाविद्याओं में यही देवी, छिन्नमस्ता के अपने विस्मयकारी रूप में अपना सिर काट लेती हैं। इस प्रकार देवी का रूप-वैविध्य देखने को मिलता है।

यह प्रदर्शनी कस्तूरभाई लालभाई संग्रह और एन सी मेहता संग्रह से चित्रों और रेखाचित्रों के चयन को साथ लाती है, साथ ही लालभाई दलपतभाई इण्डोलॉजी संस्थान में संगृहीत दुर्गा सप्तशती पांडुलिपि के फ़ोटो भी साथ लाती हैं।

“शक्तिरूपा: चित्रकारों द्वारा कल्पित देवी” इन कलाकृतियों को उनके पाठ्य स्रोतों और चित्रकारों के साथ संवादितता में रखती है। यह प्रदर्शनी दर्शकों को, देवी का शास्त्रों में वर्णन, चित्रण और पूजन पद्धति इत्यादि से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी के लिए आमंत्रित करती है। प्रदर्शनी देवी के हिंदू चित्रण पर केंद्रित है, तथा अन्य परंपराओं में उनकी उपस्थिति भविष्य के अन्वेषणों का विषय बन सकती है।

इस अनुभव को और भी गहरा बनाने के लिए मुलाकाती, आपसमें जोड़ने वाले वर्तमान माध्यमों से कलाकारों की कल्पना के दायरे में कदम रख सकते हैं। इसी हेतु, प्रदर्शनी में रखे गए QR codes ग्रंथों के वर्णित अंशों तक पहुँचने का मार्ग हैं, जो दिव्य स्त्री के साथ अत्यंत संवेदनशील जुड़ाव प्रदान करते हैं।



LALBHAI
DALPATBHAI
MUSEUM

No Entry Fee. Open Tuesday to Sunday, 10.30 am to 5.30 pm
(Closed on Mondays & Selected Public Holidays)



Please scan
here
for future
museum
programme
updates

Lalbhai Dalpatbhai Museum, L. D. Indology Campus, Opp. Gujarat University Bus Stop,
Navrangpura, Ahmedabad- 380 009, Gujarat, India. (P) +91-79-2630 6883, (M) +91-94085 36883
Email: ldmuseum1985@gmail.com, website: www.ldmuseum.co.in